खुमारी :
मीरा का नृत्य, बुद्ध का मौन

और खुमारी शब्द बड़ा गहरा है। खुमारी का अर्थ होता है—न तो बेहोशी, न होश; दोनों और दोनों नहीं। कुछ-कुछ होश, कुछ-कुछ बेहोशी; दोनों का मिलन जहां हो रहा है। वह संध्याकाल, जहां दिन मिलते हैं और रात मिलती है। न कह सकते हो दिन है, न कह सकते हो रात है। ऐसी ही एक भीतर अवस्था है। जब एक तरफ से देखो तो लगता है खुमारी है। डोलते देखोगे, मस्त होते देखोगे। दूसरी तरफ से देखोगे तो पाओगे सब थिर है, स्थितप्रज्ञ को पाओगे। एक तरफ मीरा का नाच है और एक तरफ बुद्ध का मौन है। ये दोनों जहां मिल गए हैं, उसका नाम खुमारी।

बुद्ध से पूछोगे खुमारी, तो बुद्ध कुछ उत्तर न दे सकेंगे, बुद्ध चुप रह जाएंगे। उनके तर्कशास्त्र में खुमारी न जमेगी। बुद्ध तो सिर्फ होश की बात करेंगे—जागृति, स्मृति। महावीर भी विवेक की बात करेंगे, बोध की बात करेंगे; जैसे कृष्णमूर्ति अवेयरनेस की बात करते हैं, खुमारी की बात नहीं कर सकते। कृष्णमूर्ति वही बुद्ध और महावीर की परंपरा के अंग हैं, उसी शृंखला के। लाख इनकार करें, इनकार करने से क्या होता है? असल में इतने इनकार करते हैं, उससे ही जाहिर होता है कि कहीं न कहीं उनको डर लगा ही हुआ है कि कहीं मैं भी उसी शृंखला में न गिन लिया जाऊं। वह भय ही बता रहा है। लेकिन बात इतनी साफ है।

बुद्ध जिसको सम्मासति कहते हैं, सम्यक स्मृति और महावीर जिसको विवेक कहते हैं और गुरजिएफ ने जिसको सेल्फ-रिमेम्बरिंग, आत्मस्मरण कहा है, कृष्णमूर्ति उसी को अवेयरनेस कहते हैं। इसमें कुछ भेद नहीं है, शब्दों का ही भेद है। मगर इनमें खुमारी कहीं भी नहीं आती। हां, खुमारी की बात मीरा करती है, सहजो करती है, उमर खय्याम करता है,

बुद्ध जिसको सम्मासति कहते हैं, सम्यक स्मृति और महावीर जिसको विवेक कहते हैं और गुरजिएफ ने जिसको सेल्फ-रिमेम्बरिंग, आत्मस्मरण कहा है, कृष्णमूर्ति उसी को अवेयरनेस कहते हैं। इसमें कुछ भेद नहीं है, शब्दों का ही भेद है। मगर इनमें खुमारी कहीं भी नहीं आती

अलहिल्लाज करता है, सरमद करता है। लेकिन वे सिर्फ खुमारी की बात करते हैं; उनके पास फिर होश का कोई सवाल नहीं। कबीर वही अद्भुत समागम हैं जो खुमारी की बात करते हैं; बेहोशी की नहीं, होश की भी नहीं; दोनों के बीच का संध्याकाल, जहां होश और बेहोशी मिलते हैं—ऐसे मिलते हैं कि होश बेहोश हो जाता है, बेहोशी होश हो जाती है। उस घड़ी का नाम खुमारी है। खुमारी बड़ी अद्भुत दशा है—डोल भी रहे मस्ती में और जागे भी; नाच भी रहे और जागे भी।

गीत को उठने दो और साज को छिड़ जाने दो।

चुप्पी को छूने दो लफ्जों के नर्म तारों को

और लफ्जों को चुप्पी की गजल गाने दो।

खोल दो खिड़कियां सब, और उठा दो पर्दे

नई हवा को जरा बंद घर में आने दो।

छत से है झांक रही, कब से चांदनी की परी

दीया बुझा दो, आंगन में उतर आने दो।
फिजां में छाने लगी है बहार की रंगत
जुही को खिलने दो, चंपा को महक जाने दो।
जरा सम्हलने दो मीरा की थिरकती पायल
जरा गौतम के सधे पांव बहक जाने दो।
हंसते ओंठों को जरा चखने दो अश्कों की नमी
और नम आंखों को जरा फिर से मुस्कुराने दो।
दिल की बातें अभी झरने दो हरसिंगारों-सी
बिना बातों के कभी आंख को भर आने दो।
रात को कहने दो, कलियों से राज की बातें
गुलों के ओंठों से उन राजों को खुल जाने दो।
जरा जमीं को अब उठने दो अपने पांवों पर
जरा आकाश की बांहों को भी झुक जाने दो।
कभी मंदिर से भी उठने दो अजान की आवाज
कभी मस्जिद की घंटियों को भी बज जाने दो।
पिंजरे के तोतों को दोहराने दो झूठी बातें
अपनी मैना को तो पर खोल चहचहाने दो।
उनको करने दो मुर्दा रस्मों की बरबादी का गम
हमें नई जमीन, नया आसमां बनाने दो।
एक दिन उनको उठा लेंगे इन सर-आंखों पर
आज जरा खुद के तो पांवों को सम्हल जाने दो।
जरा सागर को बरसने दो बन कर बादल
और बादल की नदी सागर में खो जाने दो।
जरा चंदा की नर्म धूप में सेंकने दो बदन
जरा सूरज की चांदनी में भीग जाने दो।
उसको खोने दो, जो कि पास कभी था ही नहीं
जिसको खोया ही नहीं, उसको फिर से पाने दो।
अरे, हां-हां हुए हम, लोगों के लिए दीवाने
अब लोगों को भी कुछ होश में आ जाने दो।
ये है सच कि बहुत कड़वी है मय इस साकी की
रंग लाएगी, गर सांसों में उतर जाने दो।
छलकेंगे जाम जब छाएगी खुमारी घटा
जरा मयख्वारों के पैमानों को तो सम्हल जाने दो।
जरा साकी के तेवर तो बदल जाने दो।
न रहे मयखाना, न मयख्वार, न साकी, न शराब
नशे को ऐसी भी इक हद से गुजर जाने दो।
उसको गाने दो, अपना गीत मेरे ओंठों से
और मुझे उसके सन्नाटे को गुनगुनाने दो।
जरा सम्हलने दो मीरा की थिरकती पायल
जरा गौतम के सधे पांव बहक जाने दो।
गीत को उठने दो और साज को छिड़ जाने दो।

वह घड़ी, वह संध्याकाल—जहां मीरा होश में आ जाती है और जहां बुद्ध नाचने लगते हैं, उसका नाम है—खुमारी। पीवत रामरस लगी खुमारी!

आनंद मैत्रेय, और निश्चय ही यह अनुभव चाहो तो कहो निर्वाण, चाहो तो कहो ब्रह्मानुभव, मगर एक बात तय है कि यह परमपद है।

– ओशो
पीवत राम रस लगी खुमारी
पहला प्रवचन, पहला प्रश्न
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)